अंक : 11

अप्रैल, 2024

वीथिका ई पत्रिका

साहित्य, संस्कृति, कला और विज्ञान को समर्पित

फूलों का हँसना

"और करूं क्या रचना
अप्रतिम
कोमल
रहे जो हंसमुख पुत्री सदा ..."
कह इतना -
परमपिता ने पुष्प रख दिये पौधों पर,
महक उठा जग
बिखरे रंग, सुगंध सभी
क्षण भर में
प्यारी वसुंधरा का श्रृंगार हो गया.

WWW.VITHIKA.ORG

वीथिका ई पत्रिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

चित्रा मोहन
मुख्य सलाहकार संपादक

सुमित उपाध्याय
प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

संरक्षक समिति
प्रो. विनय मिश्र
प्रो. प्रभाकर सिंह
डॉ. बिपिन कुमार मिश्र

वरिष्ठ सलाहकार संपादक
डॉ. आशुतोष तिवारी

वरिष्ठ सह संपादक
डॉ. सुधांशु लाल

वेब डिज़ाइन
रोशन भारती

प्रकाशक
उज्जवल उपाध्याय
यशिका फाउंडेशन, मऊ

संपादकीय समिति

डॉ मोहम्मद ज़ियाउल्लाह
डॉ अरुण कुमार सिंह
डॉ धनञ्जय शर्मा
श्री मनोज कुमार सिंह
एड. सत्यप्रकाश सिंह
श्री बृजेश गिरि
श्री नन्दलाल शर्मा

कवर पेज संपादक
अर्चिता उपाध्याय

कार्टून संपादक
कृतिका सिंह

सलाहकार परिषद
डॉ अखिलेश पाण्डेय
डॉ शिवमूरत यादव

UDYAM-UP 55 0010534

vithikaportal@gmail.com

www.vithika.org

वीथिका ई -पत्रिका

पत्रिका में छपे सभी लेख
लेखक के अपने विचार हैं

आपकी वीथिका

अंक 11

अप्रैल , 2024

गलियों की बात	सम्पादकीय	04
पुष्प वीथिका		05
फूल का खिलना	प्रो. विवेक कुमार मिश्र	06
नव वर्ष विक्रम संवत	डॉ. नमिता राकेश	09
'शिवोहम	रश्मि धारिणी धरित्री	13
नेतरहाट	डॉ धनञ्जय शर्मा	15
हमारे छोटका भईया	अनु	20
कृतिका के कार्टून	कृतिका सिंह	21
पुस्तक समीक्षा : धर्मद्वंद्व	शुभम सरोज	22
सोंधी मिट्टी : कवितायेँ		26

पुष्पराज यादव
फ़खरे आलम
डॉ एसपी सती
आलोक गिरि
अश्विनी तिवारी

कहानी : वो नया मेहमान	गोवर्धन दास बिन्नानी	30

गलियों की बात

अप्रैल , 2024

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

प्रकृति का सर्वाधिक सौन्दर्य है प्रेम तथा प्रेम को अगर शब्द से इतर मौन में परिभाषित करना हो तो "गुलाब के फूल "से बेहतर कोई भेंट नहीं।
यूं तो गुलाब हर मौसम में होता है लेकिन सबसे अधिक यह गर्मी के मौसम में खिलता है क्योंकि इसे गर्म दिन तथा ठंडी रात व हल्की सी नमी चाहिए। गर्मी के तमाम फूलों में अब बात आती है अड़हुल की एवम साथ में चैत्र प्रतिप्रदा में आने वाले नवरात्र में इसके महत्व की । सौन्दर्य के साथ तमाम औषधिय गुणों को लिए पुष्प हमें प्रेम एवम आराधना के लिए स्वयं की महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार् करवाते हैं।
प्रतीकात्मक पुष्पों के साथ नववर्ष चैत्र प्रतिपदा की शुभकामनाओं सहित तमाम साहित्यिक रचनाओं के पुष्प से नवेली सी यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है

फूलों के इन बेहतरीन तस्वीरों के लिए आभार :
बसन्त जी, हर्षवर्धन जी, चंद्रेश जी

फूल का खिलना यूं ही नहीं होता

प्रो. विवेक कुमार मिश्र
हिंदी विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय
कोटा

फूल खिलते हैं और खिलते रहेंगे । फूल खिलकर ही बोलते हैं । अपने होने का , अपने अस्तित्व का गान खिलकर करते हैं । इससे आगे अपने रंग व स्वभाव को इस तरह लेकर आते हैं कि बस देखते रहिए । जो फूल यहां खिला है वहीं फूल और जगह भी खिलता है और अपनी ओर खींचता है पर कुछ जगहें इस तरह ध्यान खींचती है कि बस वह जगह और वह घड़ी महत्वपूर्ण हो जाती है कि उस घड़ी में आप वहां है और फूल को खिलते से देख रहे हों । यह समय का एक टुकड़ा रंग देता है मन को, संसार को और दुनिया को इस तरह कि इसके अलावा और कुछ जैसे आंखों को सूझता ही न हो और आंखें हैं कि बस देखती ही जाती हैं । फूल खिल कर मन रंगते हैं, पृथ्वी पर रंग लेकर आ जाते हैं और कहते हैं कि हमारे साथ खिलना सीखों, हमारे साथ खुश रहना सीखो। फूलों के साथ पृथ्वी ही रंगवती व गंधवती होती है । फूल जहां और जैसे भी खिलते हैं बस हम सब देखते ही रह जाते हैं । खिलते फूल को कोई भी छोड़ नहीं पाता । सब खिले रंग में ऐसे खो जाते हैं कि बस यही दुनिया है और इसे ही आंखों में भरना है । आंखों में बसा लेना है । फूलों के साथ हम सब पृथ्वी को खिलते , पृथ्वी की प्रसन्नता को और पृथ्वी की रागमयता को देखते हैं । जब तब ऐसा होता है कि कहीं जाकर आंखें टिक जाती हैं । हम तो बस देखते ही रह जाते हैं । यह देखना एक आश्चर्य की तरह होता है कि अरे ! यह देखो क्या रंग उतर आया ?

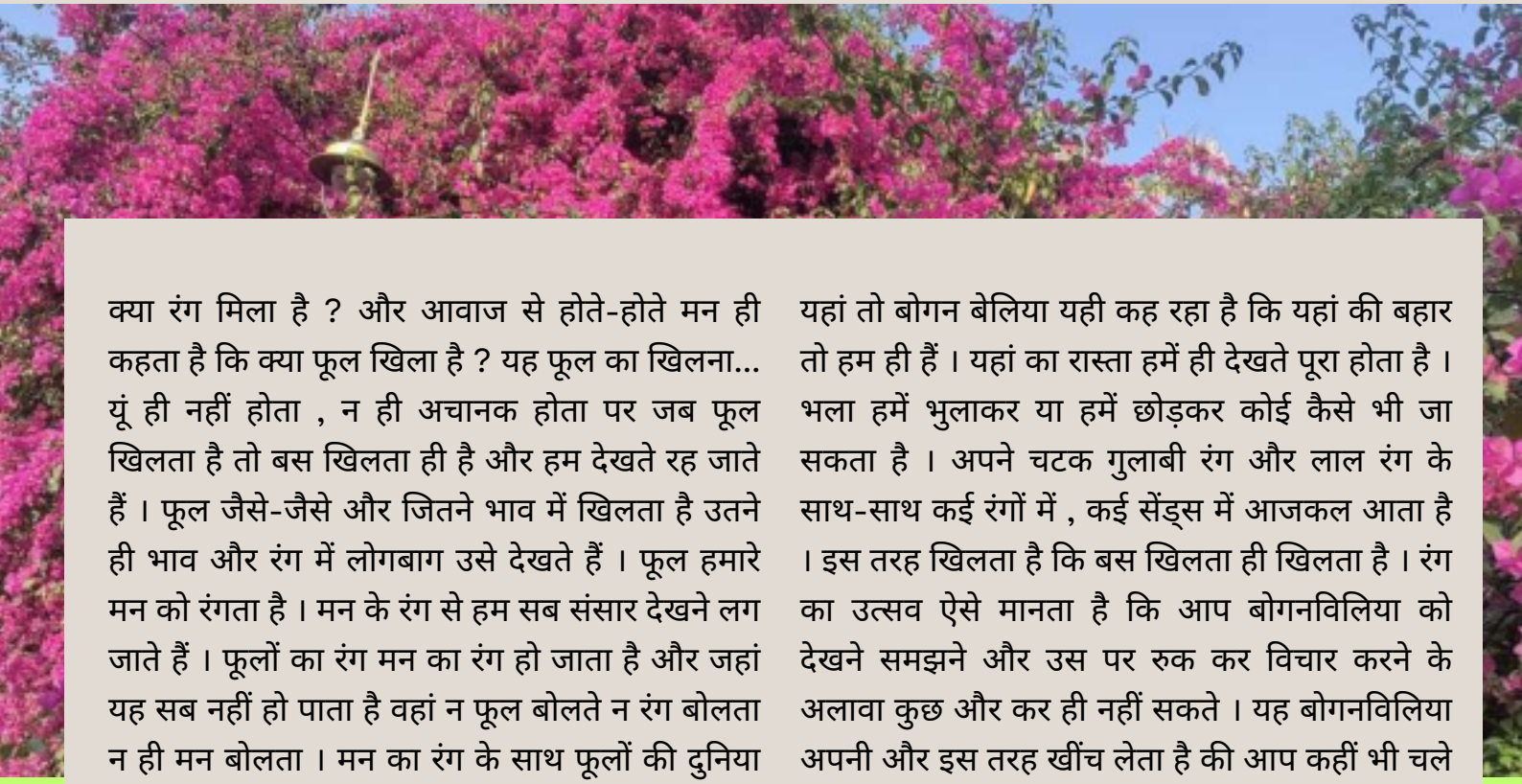

क्या रंग मिला है ? और आवाज से होते-होते मन ही कहता है कि क्या फूल खिला है ? यह फूल का खिलना... यूं ही नहीं होता , न ही अचानक होता पर जब फूल खिलता है तो बस खिलता ही है और हम देखते रह जाते हैं । फूल जैसे-जैसे और जितने भाव में खिलता है उतने ही भाव और रंग में लोगबाग उसे देखते हैं । फूल हमारे मन को रंगता है । मन के रंग से हम सब संसार देखने लग जाते हैं । फूलों का रंग मन का रंग हो जाता है और जहां यह सब नहीं हो पाता है वहां न फूल बोलते न रंग बोलता न ही मन बोलता । मन का रंग के साथ फूलों की दुनिया में घूमना और अपने हाव भाव के रंग के साथ ही संसार को जानना समझना पड़ता है ।

फूल है । है तो है । वह अपनी जगह पर अडिग है । खिला है जिसे देखना है देखे। फूल सबके लिए खिलते हैं एक बराबर दूरी से सबको रंग , गंध और आंखों में राहत भरने का काम करते हैं । फूल खिल गया पर कैसे खिला ? कितना खिलकर मिला और कहां मिला ? उसे कौन देख रहा है ? कितने लोगों के मन में बस रहा है ? यह जगह अवसर और मुख्य मार्ग पर होने की स्थिति में उसे अलग ही पहचान दिला देता है । वैसे तो फूल जहां कहीं मिलते मन को अच्छा ही लगता है और हर फूल अपने खिलने की दशा में और रंग के हिसाब से अलग-अलग स्थितियों में ध्यान खींचना ही रहता है । यहां गवर्नमेंट कॉलेज कोटा के सामने से जो सड़क सीधे रेलवे स्टेशन की ओर जा रही है वह शहर को रेलवे स्टेशन से जोड़ने वाली मुख्य सड़क है । इस मार्ग पर असंख्य लोग आते जाते हैं यहां सघन हरीतिमा के बीच बोगन बेलिया ऐसे खिला है कि बस देखते रहिए । ऐसे खिला हुआ है कि उसके आगे कोई और नहीं , कुछ भी देखने को दिखता ही नहीं है । बस बोगेनवेलिया दिखता है । इस तरह दिखता है कि उसको छोड़कर कुछ और देखने की स्थिति में नहीं होते ।

यहां तो बोगन बेलिया यही कह रहा है कि यहां की बहार तो हम ही हैं । यहां का रास्ता हमें ही देखते पूरा होता है । भला हमें भुलाकर या हमें छोड़कर कोई कैसे भी जा सकता है । अपने चटक गुलाबी रंग और लाल रंग के साथ-साथ कई रंगों में , कई सेंड्स में आजकल आता है । इस तरह खिलता है कि बस खिलता ही खिलता है । रंग का उत्सव ऐसे मानता है कि आप बोगनविलिया को देखने समझने और उस पर रुक कर विचार करने के अलावा कुछ और कर ही नहीं सकते । यह बोगनविलिया अपनी और इस तरह खींच लेता है की आप कहीं भी चले जाएं... आंखों में एक बोगन बेलिया बसा ही रहता है । कहते हैं कि जब फूल आंखों में बस जाता है । मन पर छा जाता है और उसका रंग आंखों में उतर जाता है तो फूल के खिलने की उसके होने की और उसके अस्तित्व की कहानी न केवल पूरी होती है बल्कि सार्थक हो जाती है । फूल प्रकृति के साथ , पृथ्वी के साथ रंग का जो उत्सव रचता है वह मानव मन पर जीवन पर इस तरह से छा जाता है कि उसे छोड़कर आप कहीं जा ही नहीं सकते । वह आपके साथ आपके मन को लिए लिए चलता है । फूलों ने लोगों को न केवल अपनी ओर खींचा बल्कि वह लोगों से बातचीत भी करता है । देखने में आता है की कई लोग फूलों के आसपास रुक कर ठहर कर उसे देखते हैं । उससे बात करते हैं उसको समझने की कोशिश करते हैं और उसके रंग और रूप के साथ अपने भीतर आनंद और प्रसन्नता की स्थिति को महसूस करते हैं । इस तरह से इतना तो कहा जाना चाहिए कि जब फूल खिलते हैं तो उनके साथ हमारा मन खिल उठता है । और मन का खिलना ही जीवन का सबसे बड़ा उत्सव है । फूलों ने मन को पृथ्वी को और पूरे जीवन को रंगों से उल्लास से और उत्सव से इस तरह से रच दिया है कि प्रकृति के सहारे जब आप रास्ते पर आगे बढ़ते हैं तो बोगनविलिया आपसे

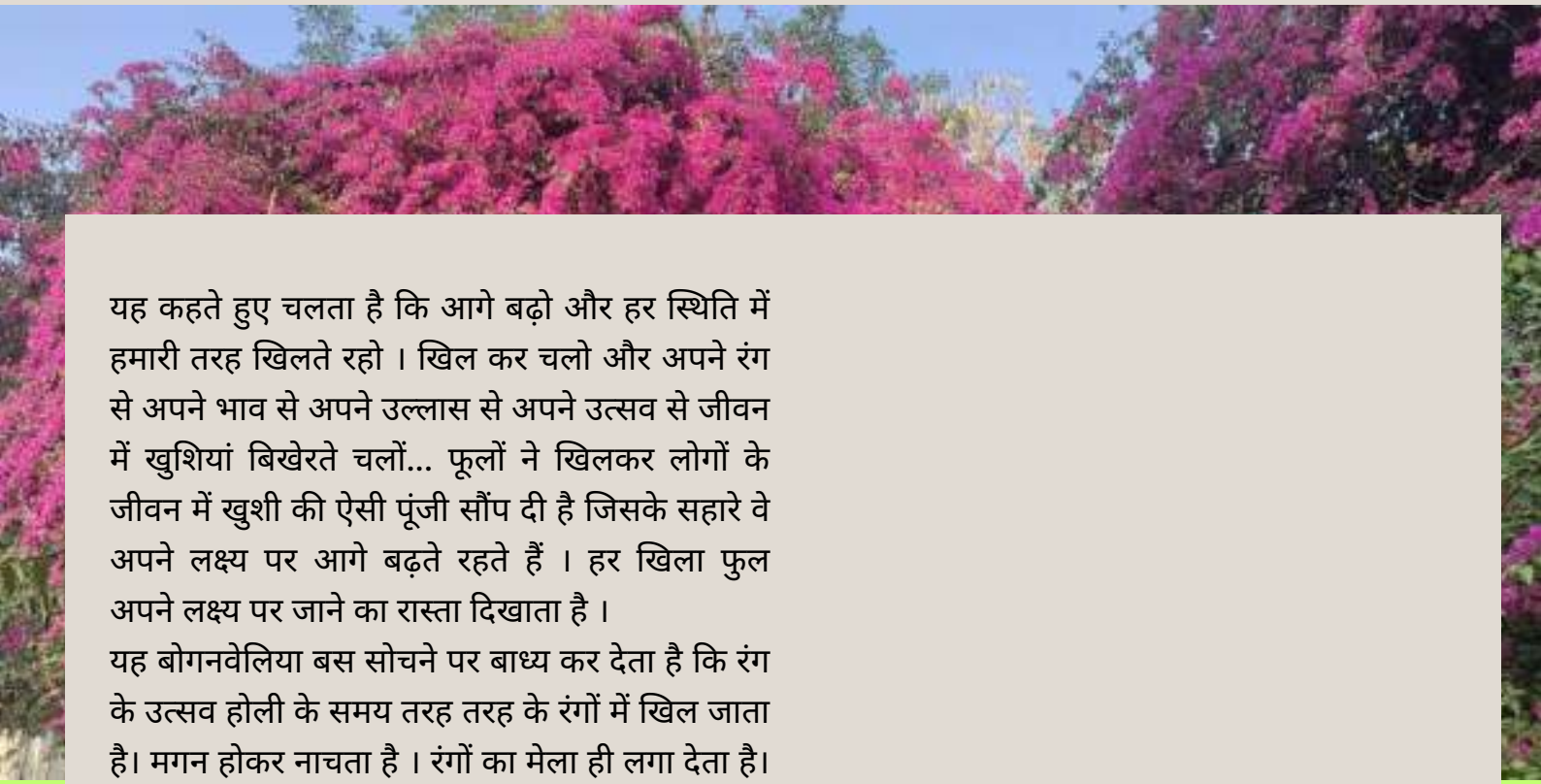

यह कहते हुए चलता है कि आगे बढ़ो और हर स्थिति में हमारी तरह खिलते रहो । खिल कर चलो और अपने रंग से अपने भाव से अपने उल्लास से अपने उत्सव से जीवन में खुशियां बिखेरते चलों... फूलों ने खिलकर लोगों के जीवन में खुशी की ऐसी पूंजी सौंप दी है जिसके सहारे वे अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ते रहते हैं । हर खिला फुल अपने लक्ष्य पर जाने का रास्ता दिखाता है ।

यह बोगनवेलिया बस सोचने पर बाध्य कर देता है कि रंग के उत्सव होली के समय तरह तरह के रंगों में खिल जाता है। मगन होकर नाचता है । रंगों का मेला ही लगा देता है। जहां जिस तरह खिलता है वहां आसपास की पूरी धरती इन्हीं के रंगों में रंग जाती है । धरती को ये अपना सारा रंग और सारी खुशी ऐसे दे देते हैं कि और कोई काम हो ही नहीं। धरती को रंग का उत्सव देते हुए कहते हैं किलो खिलो और खुश रहो । फूलों से धरती को इतना और इस तरह रंग देता है कि लोगबाग बस देखते ही कह उठते हैं कि देखो देखो प्रकृति ने होली का रंग रच दिया है । इस समय प्रकृति होली खेल रही है और पृथ्वी पर होली का भला इससे सुंदर और क्या रूप हो सकता है । यह तो बोगनविलिया ही जानता है या उसको अपनी आंखों में बसा कर देखने वाले लोगों का मन जानता है । कहते हैं कि खिलते चलों । राह चलते जब इस तरह खिले हुए बोगनवेलिया की बेल पेड़ों और दीवारों पर चढ़ते चढ़ते दीवार को ऐसे ढ़ंक लेती है कि सब कुछ भरा भरा रंगों से खिला हुआ ऐसा लगता है कि प्रकृति ने मानों रंगोत्सव रच दिया हो ... फूलों ने ऐसा संसार रच दिया है कि बस देखते रहिए.... देखते ही रहिए यहां बोगनविलिया खिला है।

नव वर्ष विक्रम सम्वत::एक अवलोकन

डॉ नमिता राकेश
वरिष्ठ साहित्यकार एवं राजपत्रित अधिकारी, भारत सरकार

नव वर्ष विक्रम संवत का इतिहास अति प्राचीन होने के साथ-साथ सनातन संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें तिथि और नक्षत्र का सटीक और सही स्पष्टीकरण है, गणित की दृष्टि से देखा जाए तो यह सबसे स्पष्ट और शास्त्रीय विधि के अनुसार है । विक्रम संवत की शुरुआत सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने की थी । विक्रम संवत में महीना के नाम और तिथि की गणना सूर्य और चंद्रमा की गति पर आधारित है साथ ही विक्रम संवत पूर्णतया वैज्ञानिक है । विक्रम संवत का इतिहास और विक्रम संवत दोनों आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण है जहां इसका इतिहास हमारे लिए गौरव की बात है वहीं दूसरी तरफ विक्रम संवत आज के ज्योतिषियों के लिए रामबाण है, इसी के आधार पर ज्योतिषी सभी निर्णय लेते हैं । हिंदू धर्म में सभी कार्यों की शुरुआत और उनका मुहूर्त विक्रम संवत पर आधारित होता है। विक्रम संवत एक कैलेंडर है जो उज्जैन के महाराजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा आज से लगभग 1279 वर्ष पूर्व विक्रम संवत के रूप में प्रारंभ किया गया था । विक्रम संवत के अनुसार ही चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से नव वर्ष मनाया जाता

है । हिंदू नव वर्ष के रूप में यह दिन संपूर्ण भारत में आज भी मनाया जाता है देश के अलग-अलग कोने में इस दिन को अलग-अलग नाम से जाना जाता है जैसे कि गुड़ी-पड़वा आदि ।

सृष्टि का जब आरंभ हुआ उसे दिन चैत्र का दिन था जो हिंदू नव वर्ष तथा अंग्रेजी महीने के मार्च-अप्रैल में पड़ता है जैसा कि हमारे धर्मग्रंथो में वर्णित है, यानी चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि अर्थात प्रतिपदा को सृष्टि का आरंभ माना गया है । हमारा नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुरू होता है, इस दिन ग्रह और नक्षत्र में परिवर्तन होता है । हिंदी महीने की शुरुआत इसी दिन से होती है, इसी को आधार मानकर भारत में शास्त्रीय वित्त वर्ष भी अप्रैल यानी चैत्र मास से आरंभ होता है । यह दिन सृष्टि या यूँ कहे युग का प्रारंभिक दिन है, इसी दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण किया था । भगवान विष्णु जी का प्रथम अवतार भी इसी दिन हुआ था । नवरात्रि की शुरुआत इसी दिन से होती है जिसमें हम लोग उपवास करते हैं । यह नया साल विक्रम संवत का संबंध हमारे कालचक्र से ही नहीं बल्कि हमारे साहित्य और जीवन जीने की विविधता से भी है। चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि के नवें दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का जन्म हुआ था। इसी माह में श्री राम मानव का रूप धारण करधरती पर आए थे । पेड़-पौधों पर पुष्प मंजरी एवं कलियां इसी समय आना शुरू होते हैं। वातावरण में एक नई गन्ध तथा उल्लास छा जाता है जो मन को आह्लादित करता है। मानव जीवन में धर्म के प्रति आस्था बढ़ जाती है ।

चैत्र मास का वैदिक नाम मधुमास भी है अर्थात बसंत का महीना । ऐसे तो बसंत फागुन में आता है पर पूरी तरह से चैत्र में पूरे वातावरण पर छा जाता है। सभी वनस्पतियां और सृष्टि इसी के आसपास प्रस्फुटित होते हैं।पक्के एवं मीठे अन्न के दानों के रूप में आम की मंजरी की लुभाती खुशबू के रूप में यह महीना प्रकृति में सुकून बिखेरता है । यह महीना कन्याओं और सुहागानों के हाथ की चूड़ियों तथा बसंत में कोयल की कूक गूंजती है। यह वही समय है जब नई फसल घर में आती है । इसी समय प्रकृति में गर्मी बढ़ने लगती है । पेड़ पौधों व जीव जंतुओं में नवजीवन का संचार होता है । लोग मदमस्त होकर आनंद में मंगल गीत गुनगुनाने लगते हैं । प्रकृति में चारों ओर पकी हुई तैयार फसल का दर्शन उत्साह को जन्म देता है । खेतों में किसानों की हलचल, फसलों की कटाई, हंसिया का खर-खर करता मंगलमय स्वर और खेतों में हंसी की ठिठोली एवं मजाक करती आवाजें भारत की आभामंडल के चारों ओर छा जाती हैं ।

यह हिंदू नव वर्ष एक उत्सव की तरह पूरे विश्व में अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग तिथियों तथा विधियों से मनाया जाता है । विभिन्न संप्रदायों के नव वर्ष समारोह भिन्न-भिन्न होते हैं। उसके महत्व की भी विभिन्न संस्कृतियों में परस्पर विभिन्नता है ।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का ऐतिहासिक महत्व यह है कि इसी दिन जगत पिता ब्रह्मा ने सूर्योदय से सृष्टि की रचना आरंभ की। सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन अपना राज्य स्थापित किया। इन्हीं के नाम पर विक्रमी संवत का पहला दिन प्रारंभ होता है।

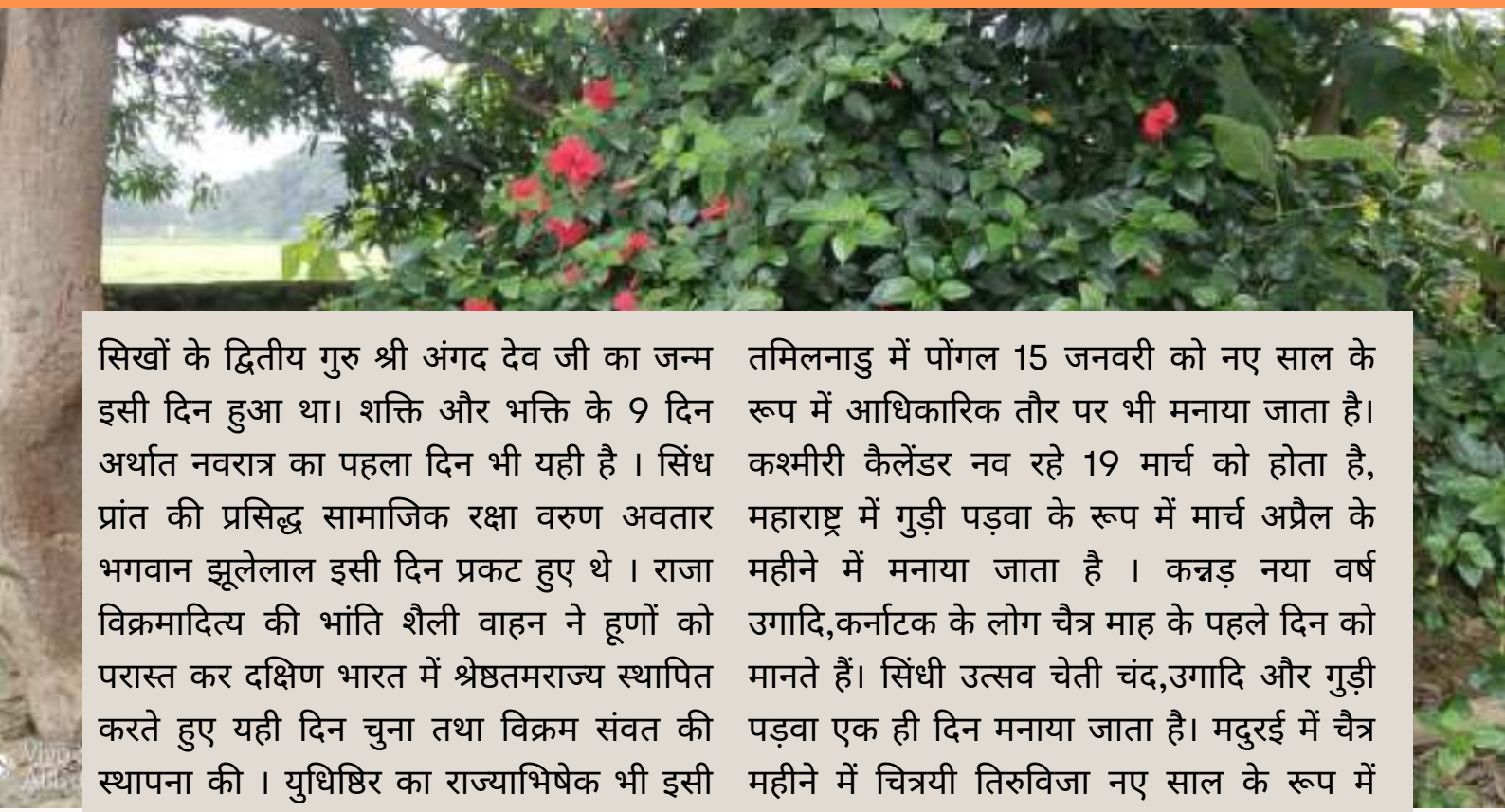

सिखों के द्वितीय गुरु श्री अंगद देव जी का जन्म इसी दिन हुआ था। शक्ति और भक्ति के 9 दिन अर्थात नवरात्र का पहला दिन भी यही है । सिंध प्रांत की प्रसिद्ध सामाजिक रक्षा वरुण अवतार भगवान झूलेलाल इसी दिन प्रकट हुए थे । राजा विक्रमादित्य की भांति शैली वाहन ने हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठतमराज्य स्थापित करते हुए यही दिन चुना तथा विक्रम संवत की स्थापना की । युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था । राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉक्टर केशव राव बलिराम हेडगेवार का जन्म इसी दिन हुआ था।महर्षि गौतम जयंती भी इसी दिन होती है । आर्य समाज की स्थापना भी इसी दिन हुई थी। अब हम अगर पश्चिमी नव वर्ष की बात करें तो रोम के तानाशाह जूलियस सीजर ने ईसा पूर्व 45 में वर्ष में जब जूलियन कैलेंडर की स्थापना की उस समय विश्व में पहली बार 1 जनवरी को नए वर्ष का उत्सव मनाया गया ।

भारतीय नव वर्ष पूरे भारत के विभिन्न हिस्सों में नव वर्ष अलग-अलग तिथियां को मनाया जाता है । वह तिथि मार्च और अप्रैल के महीने में पड़ती है । पंजाब में नया साल बैसाखी नाम से 13 अप्रैल को मनाया जाता है, बंगाली तथा तमिल नव वर्ष भी इसी तिथि के आसपास आता है । तेलुगु का नया साल मार्च अप्रैल के बीच में आता है। आंध्र प्रदेश में इसे उगादि जो युग आदि का अपभ्रंश है के रूप में मनाते हैं। यह चैत्र महीने का पहला दिन होता है।

तमिलनाडु में पोंगल 15 जनवरी को नए साल के रूप में आधिकारिक तौर पर भी मनाया जाता है। कश्मीरी कैलेंडर नव रहे 19 मार्च को होता है, महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा के रूप में मार्च अप्रैल के महीने में मनाया जाता है । कन्नड़ नया वर्ष उगादि,कर्नाटक के लोग चैत्र माह के पहले दिन को मानते हैं। सिंधी उत्सव चेती चंद,उगादि और गुड़ी पड़वा एक ही दिन मनाया जाता है। मदुरई में चैत्र महीने में चित्रयी तिरुविजा नए साल के रूप में मनाया जाता है । मारवाड़ी नया साल दीपावली के दिन होता है । गुजराती का नया साल दीपावली के दूसरे दिन होता है । इसी दिन जैन धर्म का नववर्ष भी होता है । बंगाली नया साल पोहेला बैसाखी 14 या 15 अप्रैल को आता है। पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में इसी दिन नया साल होता है ।

अब अगर बात करें भारतीय नव वर्ष के प्राकृतिक महत्व की तो यह बताना उल्लेखनीयहोगा कि चैत्र प्रतिपदा से ही वसंत ऋतु का आरंभ होता है जो उल्लास उमंग खुशी और चारों तरफ पुष्पों की सुगंध से भरी होती है फसल पकने का प्रारंभ महीना होता है यानी किसानों की मेहनत का फल मिलने का यही समय होता है। नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात किसी भी कार्य को का प्रारंभ करने के लिए शुभ मुहूर्त होता है ।

अब सवाल यह उठता है कि भारतीय नव वर्ष मनाए कैसे---?

हम भारतीय नव वर्ष एक दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएं दे सकते हैं। पत्रक बांटे, झंडा, बैनर आदि लगाए । यज्ञ करें ।

मंत्र उच्चारण के साथ अपना नया वर्ष आरंभ करें । अपने परिचितों मित्रों को नववर्ष शुभ संदेश भेजें । इस मांगलिक अवसर पर अपने-अपने घरों को साफ सुथरा रखें । अपने घरों के द्वार पर फूलों तथा आम के पत्तों की बन्दनवार से सजाएं। घरों एवं धार्मिक स्थलों की सफाई कर रंगोली तथा फूलों से सजाएं। इस अवसर पर धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करें। तथा इसमें भाग ले । प्रतिष्ठित संस्थाओं की साज सज्जा एवं इससे संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन करें । इस दिन महत्वपूर्ण देवताओं महापुरुषों से संबंधित प्रश्न मंच का आयोजन करें । वाहन रैली कलश यात्रा, विशाल शोभा यात्रा, कवि सम्मेलन, भजन संध्या, मां आरती आदि का आयोजन करें । भागवत कथा का भी हम लोग आयोजन कर सकते हैं । चिकित्सालय गौशाला में वृद्ध आश्रम में अनाथालय में दान और रक्तदान जैसे कार्यक्रम आयोजित करें।

हिंदू मान्यताओं के अनुसार भगवान द्वारा सृष्टि को बनाने में 7 दिन लगे थे इस 7 दिन के संगम के बाद यह नया वर्ष आता है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विक्रम संवत का इतिहास अति प्राचीन होने के साथ-साथ सनातन संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है । इसमें तिथियों और नक्षत्र का सही और सटीक स्पष्टीकरण है, गणित की दृष्टि से देखा जाए तो यह सबसे स्पष्ट है किसी नए संवत को चलाने की एक साथ से विधि होती है जिसके अनुसार अन्य कार्य प्रभावित होते हैं ।

अब यह जाने की विक्रम संवत की शुरुआत कैसे हुई थी जिसके बारे में एक कहानी अत्यधिक प्रचलित है। भारतीय इतिहास में उज्जैन के महाराजा विक्रमादित्य का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है, विक्रम संवत की शुरुआत की संपूर्ण कहानी महाराजा विक्रमादित्य से जुड़ी हुई है। एक न्याय प्रिय राजा होने के साथ-साथ महाराजा विक्रमादित्य प्रजा प्रेमी थे उनके समान भारत के विशाल भूभाग पर विदेशी शकों का शासन था । शक शासकों के बारे में कहा जाता है कि वे बहुत ही निर्दयी और क्रूर थे यह अपने दुश्मनों के साथ-साथ आम जनता तथा प्रजा पर भी बहुत अत्याचार करते थे। जब महाराजा विक्रमादित्य यह देखते थे तो उन्हें बहुत कष्ट होता था । विक्रमादित्य ने कैसे भी करके शकों को भारत से खदेड़ने की योजना बनाई । नेक इरादे से किए गए काम में निश्चित रूप से सफलता मिलती है।

महाराजा विक्रमादित्य ने शकों को परास्त कर दिया । इस जीत के साथ उज्जैन के राजा विक्रमादित्य प्रजा के चहेते बन गए। यह जीत कई मायनों में बहुत महत्वपूर्ण थी। इससे आम जनता को भय मुक्त मिली । इस जीत को यादगार बनाने के लिए महाराजा विक्रमादित्य ने आज से लगभग 2079 वर्ष पहले अर्थात 57 ईसवी पूर्व विक्रम संवत की शुरुआत की। फागुन माह के समाप्त होते ही नव वर्ष आरंभ हो जाता है लेकिन कृष्ण पक्ष के पश्चात चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिबद्ध के प्रतिपदा के दिन यह नव संवत मनाया जाता है ।

शिवोहम! शिवोहम !

रश्मि धारिणी धरित्री

सुधि जनों को धारित्री धारिणी का सस्नेह वंदन

होली बीती फाल्गुन के रंगों में झूम कर बसंत की मदमाती सुगंध हवा में बिखेर कर। बौर से लदे आम के वृक्ष ही नहीं, झाड़-झंकाड वाले खरपतवार भी झूम-झूम कर रँग-बिरंगे फूलोँ से खेतों के किनारे, जंगलों में, तालाबों, नदियों के किनारे पल्लवित हो रहे हैं। मैदानों में जहाँ सेमल, टेसू, गुलमोहर, अमलतास रँग बिखेर रहे हैं, हिमालय पर बुरांश, आड़ू, सेब, नारंगी, प्लम के फूलों से नई चित्रकारी कर रहे हैं। ग्रीष्म ऋतु चैत के आगमन के साथ अपना प्रभाव दिखा रही है। गेँहू की फसल पक चुकी है और स्त्री-पुरुष मेहनत से कटाई में पसीना बहाते काम कर रहे हैं। चैत का शिव पार्वती संवाद प्रस्तुत है :

दूर ढाक् के जंगल में ताल किनारे हमारे शिव जी ध्यान मग्न हैं, व्यग्रता से स्वेद बिंदु स्पष्ट हैं। पार्वती चिंतित हो कर अपना आँचल जल से भिगो कर उनको शीतलता देने का असफल प्रयास कर रही हैं। बहुत कहने पर भी कैलाश प्रस्थान नहीं हुआ, मायके की याद आती है और वहाँ भी जाने नही दे रहे।

पार्वती ने कहा, " "सुने नाथ !"
ध्यान से बाहर आ के शिव जी बोले "हाँ प्रिये !"
"बहुत से प्रश्न हैं उनका समाधान करें स्वामी"
"एकाएक इस बढ़ती तपन का क्या कारण है। अभी नंदी बता गए हैं हिमालय पर बहुत अफरा-तफ़री मची है। गुल्दारों का आतंक मचा है, लोग भयभीत हो कर घरों में बंद हो रहे हैं। और घर भी सुरक्षित नहीं है, कहीं-कहीं दरारें आ रही है तो कहीं पूरा गाँव धसक् कर नीचे आ रहा है।मेरा जहाँ सिद्ध पीठ है वो पहाड़ी नीचे धसकती जा रही है। ऋतुओं का चक्र बिगड़ गया है।"
शिव जी बिना मुस्कुराये चिंतित स्वर मे बोले, "शृणु देवी प्रव्यक्ष्यामि, ये आपके ही संतानों के पाप कर्म हैं जो लोभ में मेरी तपस्थली को भी नही छोड़ रहे। इनको भक्ति नहीं तीर्थ स्थल में पर्यटन चाहिए। जहाँ ये बड़ी मोटरों में आसानी से जा सकें। अंधाधुंध तरीके से अनियोजित सुरंगों का निर्माण किया जा रहा है। हिमालय कच्चे पहाड़ हैं। नीति-निर्माता पश्चिम की अंधी नकल करके रेल को हमारे-तुम्हारे पवित्र स्थलों तक ले जा रहे हैं। जहाँ-जहाँ से सुरंगे गुज़र रही हैं वहाँ भूस्लखन बढ़ गया है, उसकी आवृत्ति बढ़ती जा रही है। इन सबसे उत्पन्न शोरहलचल, वनों की कटान, मलबे को अनियोजित तरीके से नदियों में डालना। वन्य जीवों की शान्त जीवन में खलल कर देना। ये घबरा कर इधर उधर भाग रहे हैं। इनके प्राकृतिक मार्ग बदल गए हैं, भोजन नही है तो आबादी की तरफ बढ़ रहे हैं। ये घटनाएं अनायास बढ़ी गर्मी को नियंत्रित नही कर पा रही हैं, परिणाम स्वरूप देर से हिमपात, वर्षा और फलों के पकने में देर होना। हरियाली का नष्ट होना। ऋतु चक्रों का बिगड़ना। इन्ही सब घटनाओं का प्रभाव है।

मैं ही साक्षात् हिमालय हूँ। मैं पीड़ा का अनुभव कर रहा हूँ। मुझे तरह तरह के छिद्रों से भर दिया है। मेरा ध्यान भंग करने में लगे लोग ये नहीं जानते कि मेरा तीसरा नेत्र खुल गया तो तबाही निश्चित है। मैं पीड़ा में हूँ, इसीलिए बसंत का, नई अनाजों की फसल का आनंद नहीं ले पा रहा।

हे पार्वती सुनों! मैं और तुम केवल मनुष्यों मे वास नहीं करते अपितु इस पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के हर जीव-जंतु, वनस्पति सभी तत्वों में वास करते हैं। प्राचीन कथाओं से इन्होंने कुछ नहीं सीखा। जो धर्म के नाम पर अधर्म करेंगे। स्वार्थ लोभवश निरीह प्राणियों वनस्पति को सतायेंगे तो मैं इनका निश्चित रूप से विनाश करूँगा। तारकासुर के पुत्रों ने मेरी भक्ति पूजा करके त्रिपुर बसाये थे जो ब्रह्मांड के नियमों के विरुद्ध जा कर तकनीकी और विज्ञान की श्रेष्ठतम ज्ञान से ग्रहों की स्थिति बदल कर मनमाने तरीके से स्थापित किये थे। लेकिन एक भूल कर बैठे। निरीह लोगों पर अत्याचार। उनकी भक्ति पूजापाठ तपस्या कुछ काम ना आया। पृथ्वी मेरा ओजस्वी रथ बनी तो सूर्य चंद्र उसके पहिये। साक्षात हिमालय मेरे धनुष अग्नि वायु बाण। और इस तरह तीनो त्रिपुरों का एक साथ नाश किया।
हे अपर्णा! अगर मनुष्य जान जाए कि आसुरी राक्षसी हों या दैवीय प्रवृत्ति सब हमारे अंदर ही है, तो उसको नियंत्रण किया जा सकता है। ये चेतना तो मनुष्य को स्वयं लानी होगी। जो चैतन्य हैं और साक्षात विनाश का भविष्य देख रहे हैं वो दुखी हैं बाकी सब मदमस्त हैं अपने मूलाधार चक्र में फंसे हुए। इनकी चेतना ही सृष्टि बचा सकती है और संसार को बचाने का एकमात्र उपाय है करुणा जो चेतना से ही जन्म लेता है। करुणा जब पिघलती है तो धरती पर राम बन कर अवतरित होती है।

इति शिव पार्वती संवाद
शुभ राम नवमी

नेतरहाट : एक अंतहीन सफर

डॉ धनञ्जय शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, सर्वोदय पी.जी.कॉलेज
घोसी, मऊ

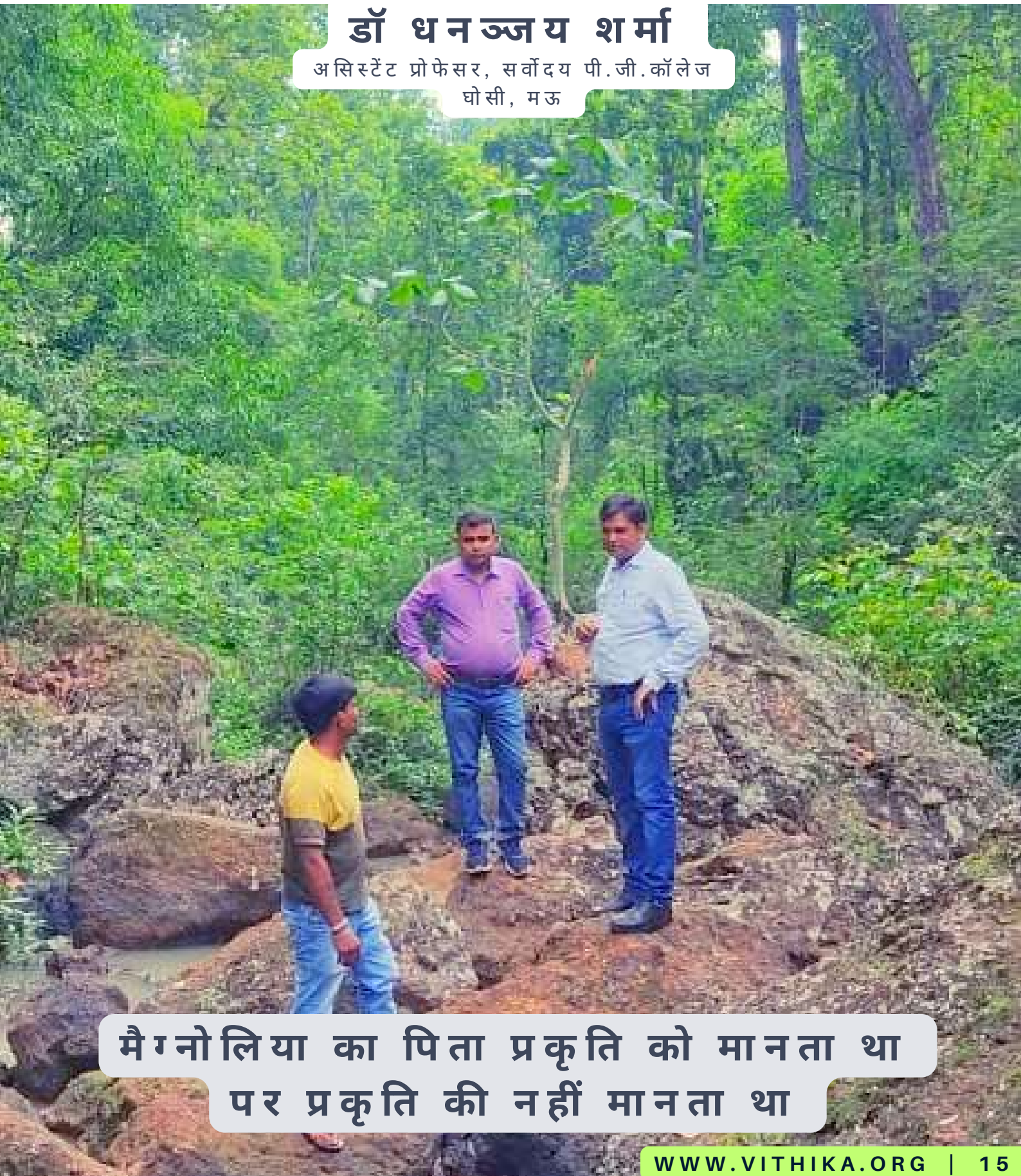

मैग्नोलिया का पिता प्रकृति को मानता था
पर प्रकृति की नहीं मानता था

नेतरहाट

रामगढ़ शिक्षक काउंसलिंग के समय से नेतरहाट का नाम बार-बार सुनने को मिल रहा था सहयोगी शिक्षकों से पता चला नेतरहाट झारखण्ड का सबसे खुबसूरत स्थल है । इसे झारखंड का कश्मीर, पहाड़ों की मल्लिका, छोटानागपुर के पहाड़ियों की रानी भी कहा जाता है। आवसीय विद्यालय, उगता हुआ सूरज एवं डूबता सूरज के लिए जाना जाता है। प्राकृतिक सौन्दर्य एवं चारों तरफ घने जंगलों के बीचों बीच नेतरहाट हिल स्टेशन, लम्बे - लम्बे साल के पेड़, पाइन के जंगल और ठण्डा स्थल इसके आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। नेतरहाट की तरफ ध्यानाकर्षण का प्रमुख कारण नेतरहाट आवासीय विद्यालय है जिसकी चर्चा झारखण्ड में शिक्षक नियुक्त होने के दिन से होने लगी थी। यह चर्चा इतनी बलवती हुई कि हम भी नेतरहाट के प्राकृतिक सुषमा का हिस्सा बनने की कोशिश करने लगे।

और एक दिन 22 जून की सुबह लगभग 10 बजे, हम चार साथी नेतरहाट के लिए निकल पड़े। मन में नयी उमंग, ऊर्जा और उत्साह के साथ हम लोग रामगढ़ से राँची-रामगढ़ हाईवे पकड़कर झारखंड के पठारी मार्ग से होकर जाने लगे।रामगढ़ से नेतरहाट की दूरी लगभग दो सौ किलो मीटर है। सबसे पहले रामगढ़ से रांची फिर बीजूपारा, पुरू होते हुए लोहरदगा पहुंचे। झारखंड प्राकृतिक और खनिज दोनों रूपों में सम्पन्न राज्य है, रामगढ़ रांची जहां कोयले के अयस्क के लिए जाना जाता है, वहीं लोहरदगा लोहे के लिए जाना जाता है। रांची रामगढ़ की धरती काली है, हवा और पानी में भी कोयले के कण घुले रहते हैं, जबकी लोहरदगा की मिट्टी लाल मिट्टी में आयरन के आक्साइड की अधिकता के कारण ऐसा हुआ है । कच्चे रोड़ पर चलने के कारण गाड़ियों के टायर भी लाल रंग के हो गए थे, इस प्रकार पठारी और पहाड़ी मार्ग से होते हुए हम अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहे थे । रास्ते में कहीं घना जंगल, कहीं घाटी एवं कहीं छोटी-छोटी पहाड़ियों मिलती रहीं। रास्ते में बहुत सारे आदिम बस्तियां मिलती जो कच्चे मकानों एवं झुग्गी-झोपड़ियों से बनी थी। कुछ स्थलों पर हम गाड़ी रोक कर उतरने पर विवश हो जाते।

घुमक्कड़ वीथी

लोहरदगा जिला मुख्यालय पार करते दिन के एक बज गए थे मगर सूर्यनारायण का कहीं पता न था शायद बादलों के आगोश में खो गए थे। उत्तर भारत में जून का महीना अपनी तपिश के लिए जाना जाता है पर झारखंड के मौसम की अपनी अलग विशेषता है । झारखण्ड में सबसे गर्म दिन अप्रैल माह में होते हैं। जून आते-आते वर्षा चालू हो जाती है। मई जून में जिस दिन तपिश बढ़ी तो वर्षा होना तय है। जब हम निकले तो मौसम साफ था, नीले आसमान में कहीं-कहीं सफेद बादल नज़र आ रहे थे। दोपहर के बाद अचानक मौसम ने करवट लिया ।लोहरदगा मुख्यालय क्षेत्र पार करते हमें भारी बारिश का सामना करना पड़ा। बारिश झारखण्ड की प्राकृतिक सुन्दरता को कई गुना बढ़ा देती है। लोहरदगा पार कर जैसे ही हम लातेहार की सीमा में प्रवेश किए, छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच से गुजरता हुआ मार्ग मनमोहक लग रहा था। एक तरफ घाटी, दूसरी तरफ पहाड़ी, वर्षा के नीले काले बादल पहाड़ों से टकराते हुए प्रतीत हो रहे थे। बहुत सारे जंगल और पहाडी के बीच काले-सफेद बादल अपनी आवारगी का परिचय दे रहे थे, जो आसमान को छोड़कर हाथी शावक की भांति अपनी मंडली से बिछड़कर जंगल में भटक गए थे। ऐसे दृश्य को हम कैमरे में कैद करने का असफल प्रयास करने लगे थे, बादल इतने नीचे उतर आए थे मानो पहाड़ी, जंगल और बादलों के मध्य संवाद चल रहा हो। बारिश थमने का नाम नहीं ले रही थी।

रांची से लगभग 100 किलो मीटर दूर घाघरा नामक स्थान जहां से नेतरहाट अभी 56 किलो मीटर दूर था । हम घाघरा को पार कर लातेहार जिला में नार्थ कोयल नदी पार करने के बाद, नेतरहाट घाघरा मोड़ से नेतरहाट के लिए घूम गए। तेज बारिश, बादलों का गर्जन, रह रह कर कौंधती बिजली मन में एक आशंका उत्पन्न कर रही थी। घाघरा नेतरहाट मार्ग पर लगभग 30 किलो मीटर चलने के बाद विशुनपुर नामक स्थान पर हमने नाश्ता किया, ड्राईवर के अनुसार विशुनपुर के बाद घना जंगल और घाटी मार्ग आरम्भ होगा। विशुनपुर में दिन के ढलान और काले बादलों के कारण जल्दी शाम ढलने लगी थी। कुछ दूर आगे बढ़ने पर घाटी मार्ग आरम्भ हुआ। लम्बे-लम्बे साल के पेड़ और झाड़ियों के मध्य से गुजरता हुआ शर्पिलाकार मार्ग, एक तरफ पहाड़ी, दूसरी तरफ खाई । क्रमशः मोड़दार चढ़ान पर चढ़ते हुए हम झारखण्ड के सबसे खतरनाक घाटी मार्ग से गुजर रहे थे।

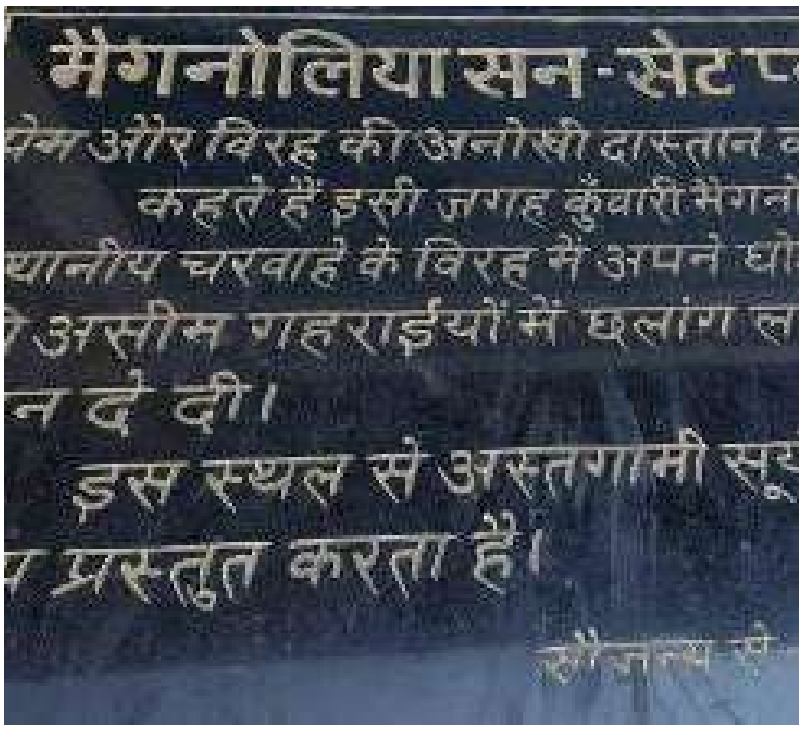

रात्रि के अंधेरे में यह हमारे जीवन का पहला अनुभव था। रास्ते में बीच-बीच में बादलों का गुबार आ जाता । एक दो मिनट तक गाड़ी उसी में गुम रहती । आगे-पीछे, दाएं-बाएं सिर्फ धुंए के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता। एक अज्ञात आशंका मन में बैठ गयी थी, रास्ते में एक दो गाड़ियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिला सभी साथी सहमें हुए इस प्राकृतिक नजारे को देख रहे थे । सबका ध्यान ड्राइवर की कुशलता पर केंद्रित था। रह-रह कर बिजली की चमक, पहाड़ी, खाई और जंगल के दृश्य आंखों में भर जाते थे ।

इसी जद्दोजहद, भय और आशंका में तमाम मोड़, चढ़ान और ढलानों को पार करते हुए लगभग रात्रि के आठ बजे एक गेट दिखाई दिया जिस पर लिखा था- "धरती का स्वर्ग नेतरहाट" । अब हम लोग पहाड़ों की मल्लिका नेतरहाट में प्रवेश कर चुके थे। बारिश की अधिकता के कारण दुकानें और होटल जल्दी बंद हो चुके थे, सड़कों पर सन्नाटा था। थोड़े प्रयास के बाद घुमते हुए हमें होटल सनराइज मिला जहां ठहरने और भोजन की व्यवस्था मिल सकती थी। समुद्रतल से 3622 फिट की ऊंचाई पर स्थित होने के कारण रात्रि में ठण्ड अधिक थी । जून के महीने में भी हमें कम्बल की जरूरत पड़ी। रात्रि के 12 बजे तक हम लोग सो गए कि सुबह जल्दी उठना है।

नींद खुली तो सुबह के सात बज रहे थे, जल्दी-जल्दी होटल के कमरे से बाहर निकला गया कि सूर्योदय देखा जाय, लेकिन बारिश तो बंद हो चुकी थी पर आसमान में बादल छाए थे। सुबह का वातावरण देखकर लग रहा था कि प्रकृति अपने स्वभाविक रूप में कितनी खूबसूरत होती है । यहां मानवीय हस्तक्षेप न के बराबर था, चारों और लम्बे-लम्बे चीड़ और साल के वृक्ष देखकर मुझे उत्तराखण्ड के गंगोत्री की याद आने लगी । नेतरहाट के खूबसूरत और मनमोहक दृश्य में मन प्रकृति की वादियों में रम गया। कुछ अव्यक्त यादें सासों में समाने लगीं, चारो ओर नीरवता थी, यदि कुछ शब्द थे तो पक्षियों के कलरव के । जीवन की आपाधापी से दूर एक अलग दुनिया, जहां प्रत्येक क्षण प्रकृति बदलती हुई नजर था रही थी। हवाओं में अलग-अलग खुशबू समझ में नहीं आ रहा था किधर जाएं। इसे कोई प्रकृति प्रेमी ही समझ सकता था। तब तक मित्र राकेश मिश्र जी मुझे अपने होने का एहसास कराते हुए बोले, "मित्र हमलोग घूमने आए हैं, ध्यान लगाने नहीं।"

लगभग नौ बजे सुबह हम लोग होटल छोड़कर नेतरहाट भ्रमण पर निकल गए।

होटल में वेटर के बताने के अनुसार सबसे पहले नेतरहाट आवासीय विद्यालय में गए । गुरुकुल परम्परा में चलने वाले इस विद्यालय की स्थापना सन 1954 में हुई थी। उसका संचालन झारखंड माध्यमिक बोर्ड द्वारा किया जाता है। इसमें प्रवेश परीक्षा द्वारा आठ से दस आयुवर्ग के बच्चों का प्रवेश उच्चतर माध्यामिक परीक्षाओं के लिए किया जाता है। यहां से पढ़े बच्चे भारत के विभिन्न प्रशासनिक अधिकारी, वैज्ञानिक तथा चिकित्सक बनते हैं। गुरुकुल परम्परा पर आज भी यह अनोखा विद्यालय है जो अपने प्राकृतिक फलक और भव्यता के लिए पूरे भारत में जाना जाता है। आगे बढ़ने पर हमें नेतरहाट पाइन फारेस्ट (चीड़ का जंगल) मिला। चीड़ का जंगल नेतरहाट के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। चीड़ जो मध्य हिमालयी जलवायु का वृक्ष है, घने जंगल के बीच सूर्य की रोशनी बड़ी मुश्किल से नीचे आती थी। चीड़ के लम्बे-लम्बे पेड़ शांत भाव में किसी तपस्वी की भांति ध्यान मग्न थे। जंगल ऐसा जिसमें जंगलीपन नहीं था, मिलावट भी नहीं, एकरूपता थी। नीचे चीड़ की सुईनुमा पत्तियों से पटा सरपट मैदान था। आगे बढ़ने पर हमें नाशपाती का बगान मिला, सीढ़ीनुमा खेतों में पत्थरों के बाड़े से घिरे कुछ व्यक्तिगत एवं कुछ सरकारी बगान लगे थे जिन पर गुच्छेनुमा नाशपाती लगे थे। थोड़े से प्रयास में हमें ज्यादा नाशपाती मिल गये, इससे दोपहर के भोजन का काम बराबर हो गया। धीरे- धीरे सूर्य सिर पर आ गया, अभी बहुत स्थलों पर जाना था। वहीं बगल से एक रास्ता था जहाँ लिखा था नेतरहाट लेक, जो प्रकृति निर्मित एक बड़ा सा जलाशय था। विपरीत मौसम के कारण पानी तलहटी में पहुँच गया था। स्थानीय लोगों से पता चला नेतरहाट में पेयजल की आपूर्ति इसी झील से होती है। वहां से दो-तीन किमी आगे बढ़ने पर लोअर घाघरी फॉल और अपर घाघरी फॉल गए। जून का महीना होने के कारण झरना मन्द प्रवाह में कल-कलकरता हुआ सिसक रहा था।घूमते-घूमते हम लोग नेतरहाट यात्रा के अंतिम पड़ाव मैग्नोलिया सनसेट प्वाइंट पहुंचे। मैग्नोलिया सनसेट प्वाइंट नेतरहाट पहाड़ी टापू के पश्चिमी किनारे पर स्थित था जहां एक घोड़े की प्रतिमा पर एक लड़की बैठी हुई थी। जहां एक साइनबोर्ड पर लिखा था "मैगनोलिया सनसेट प्वाइंट प्रेम और विरह की अनोखी दास्तान बयां करता है।.....कहते हैं, इसी जगह कुंवारी मैगनोलिया ने स्थानीय चरवाहे के विरह में अपने घोड़े सहित घाटी की असीम गहराईयों में छलांग लगाकर अपनी जान दे दी।

इस स्थल से अस्तगामी सूर्य नयनाभिराम प्रस्तुत करता है।" यहां से नीचे लगभग पांच - छः सौ फिट गहरी खाई और जंगल था। सूर्यास्त के समय ढलता हुआ सूरज गोल गेंद के समान पहाड़ों में छिपता हुआ नज़र आता है। घूमते हुए हमें प्यास लगी, बोतल का पानी भी समाप्त हो चुका था, कुछ स्थानीय बच्चों की मदद से पता चला कि सनसेट प्वाइंट के नीचे खाई में एक झरना है, जहां लोग पानी पीते हैं। हम लोग भी पानी की तलाश में नीचे उतरने लगे, हाथ और पैर के सहारे खड़े ढलान पर बहुत मुश्किल से आठ सौ मीटर के आस-पास नीचे उतरे जहां बहुत मंद गति का एक झरना था। झरने पर पहले से तीन आदिवासी युवतियां बैठी थीं जो अपने घर का जूठा बरतन और गंदा कपड़ा धुलने आयी थीं । पूछने पर पता चला वे असुर जनजाति से थीं। उनके जीवन में जल की आपूर्ति इसी झरने से होती है, उनकी बस्ती उसी ढलान में दो किलोमीटर नीचे की तरफ थी। कुछ अन्य बातें करने के बाद एक युवती से मैंने पूछा मैग्नोलिया कौन थी ? .....अचानक ऐसे सवाल से वह सहम सी गयी फिर लाज और संकोच भरे शब्दों में कहने लगी मैग्नोलिया एक अंग्रेजन लड़की थी जो आदिवासी चरवाहे से प्रेम करती थी ।..... कहते-कहते उसका सांवला चेहरा लाल होने लगा और अपने दोनों हथेलियों से सिर नीचे करके अपना चेहरा ढंक ली आगे कुछ न बोल सकी ।

नेतरहाट की खोज एवं विकास अंग्रेज अधिकारियों द्वारा किया गया था । बहुत से अंग्रेज अधिकारी प्रकृति प्रेमी हुआ करते थे, उन्हें अपने देश की तरह ठंडे जलवायु प्रदेश की खोज रहती थी। इसी सिलसिले में जब एक अंग्रेज लेफ्टिनेंट गवर्नर नेतरहाट की धरती पर पहुँचा तो उसे लगा प्रकृति की देवी यहां बैठी है। फिर बहुत सारे अंग्रेज अधिकारी छुट्टियां बिताने इंग्लैण्ड जाने के बजाए नेतरहाट में आने लगे। इन्ही अंग्रेज अधिकारियों में एक अंग्रेज थे सर एडवर्ड गेट, जो रिटायर होने के बाद अपने देश जाने के बजाय नेतरहाट में बस जाना पसंद किए। मैग्नोलिया, सर एडवर्ड गेट की पुत्री थी जो अंग्रेज होते हुए भी भारतीय लोगों को पसंद करती थी। नेतरहाट में मैग्नोलिया आदिवासी बच्चों के बीच अपना वक्त बिताती। एक दिन मैग्नोलिया घोड़े से घूम रही थी कि उसके कानों में बांसुरी की सुरीली आवाज आने लगी। मैग्नोलिया आवाल का पीछा करते हुए पहाड़ों में गयी तो देखा एक आदिवाली लड़का ऊंचे पत्थर पर बैठ कर बांसुरी बजा रहा है और जानवरों को चरा रहा है। बांसुरी की आवाज मैग्नोलिया को भीतर तक बींध गयी ।

मैग्नोलिया हर शाम उस चरवाहे की बांसुरी सुनने जाने लगी । धीरे-धीरे मैग्नोलिया और चरवाहे के बीच मधुर मिलन होने लगा। चरवाहा जब बांसुरी बजाता तब मैग्नोलिया मौन साधना किया करती, उसे चुपचाप निहारती । एक दिन सूर्यास्त के बाद मैग्नोलिया चरवाहे की बांसुरी पर मौन साधना कर रही थी तभी उन्हें अंग्रेज सिपाहियों ने मैगनोलिया और चरवाहे को एक साथ देख लिया और मैग्नोलिया के पिता को जाकर बता दिया। मैग्नोलिया का पिता बेशक प्रकृति प्रेमी था पर प्रकृति के नियमों में विश्वास नहीं करता था। पिता का कहना था तुम्हारा रूप-रंग नस्ल जाति सब अलग है, एक आदिवासी लड़के में क्या रखा है। मैग्नोलिया प्रकृति के नियम में विश्वास करती थी। पिता से स्पष्ट कह देती है कि मैं उस आदीवासी लड़के से प्रेम करती हूँ .....। पिता के बहुत समझाने पर मैग्नोलिया जब नहीं मानी तब एक दिन अंग्रेज अधिकारी ने चरवाहे को उसी सनसेट प्वाइंट से नीचे खाई में फेंकवा दिया। मैग्नोलिया को जब उसकी कोई खबर नहीं मिलती है तो वह पागलों की तरह भटकने लगी,... उसे एक महिला द्वारा पता चला कि वह जिस चरवाहे से बांसुरी सुना करती थी, उसे कुछ अंग्रेज सिपाहीयों ने खाई से नीचे फेंक दिया जहां उसकी मृत्यु हो गयी।

मैगनोलिया चरवाहे से वास्तविक प्रेम करती थी। अगले दिन मैग्नोलिया घोड़े पर सवार होकर आयी और तेज़ रफ्तार में उसी सनसेट प्वाइंट से जहां प्रत्येक दिन सूर्य का अवसान होता है, घोड़े सहित खाई में छलांग लगा ली। वे जीते जी तो साथ नहीं मिल सके, पर मर कर अमर हो गये। उनका प्रेम आज भी जिंदा है।

कहानी सुनने के बाद हम गहरे अवसाद से भर गए। प्रकृति निरीक्षण से जो प्रकृति रस मन में भरा था अब वह वियोग रस में बदल गया। अब संध्या का वक्त हो चला था, सूर्यदेव अपनी यात्रा के अंतिम पड़ाव पर थे, उनका तेज अब मंद हो रहा था, लाल गेंद के समान पश्चिम के आकाश में लटका हुआ सूर्य धीरे-धीरे नीचे उतर रहा था।

पश्चिम का आकाश खून के रंग में ढला जा रहा था फिर एकाएक वह लालिमा नीलिमा में बदल गयी मानो हर रोज मैग्नोलिया अपनी यादों के साथ जीवित हो उठती है और सूर्यास्त के बाद मर जाती है। एक गहरे विसाद के साथ हम लोग नेतरहाट की वादियों से विदा हो लिए, यह सोचते हुए कि नेतरहाट की प्रकृति में एक अद्भुत मादकता है जो बार-बार मिलने के लिए आकर्षित करती रहेगी।

हमारे छोटका भैया

लेखिका -अनु

सुबह -सुबह आंख भी पूरी तरह नहीं खुली थी तब तक कहीं से हो -हल्ला की आवाज़ आने लगी,समझ गया कि भैया ने आज फिर किसी को आपस में भिड़ा दिया । ऐसे ही थे हमारे भैया मस्त स्वभाव वाले, खुशमिजाज पर खुड़चालीपन भी एक से एक करते थे । बहुत खुशनसीब थे हम और हमारा बचपन,भैया मुझे बहुत प्यार करते थे हमेशा साथ लिए रहते और मैं उनकी हां में हां मिलाता हर उजबकई में भी उनकी तरफ से ही रहता।

गांव में लोग भूत-प्रेत के चक्कर में कुछ अधिक ही रहते थे सो भैया बस उसी का लाभ उठाते,जैसे एक हांडी में करिखा पोत कर, उस पर सिन्दूर से टिक कर, लौंग रखकर किसी के भी दुआरे रख देते,फिर क्या जैसे ही उस घर के लोगों की आंख खुलती तमाशा शुरु हो जाता, जिसके उपर शंका होती उसको निशाना बनाकर गाली दी जाती, अगला भी समझ जाता और ठेंठ में भिड़ान हो जाती । अब देखिए आगे कि छोटका भैया एक-आध घन्टे बाद पहुँचते और भीड़ के सामने हीरो बनकर हंड़िया उठा लेते ये कहकर कि "ठीक बा भईया भूतवा हमहीं ले जाते हईं तुह लोगन चुप हो जा,छोटू चल चलल जा भूत के साथे" छोटू मतलब मैं और दोनों लोग शान से गर्दन तान कर चल देते।

ऐसे ही एक भूतहा पेड़ कहलाता था गांव में, आम का पेड़ था पर डर के कारण कोई पास नहीं जाता था, मजबूरी थी कि रास्ते में पड़ता था इसलिए भगवान का नाम लेकर दौड़ते हुए हम लोग दिन में भी रास्ता पार करते। एक दिन फिर मई की भरी दुपहरी में भैया को कुछ सूझा,मुझसे बोले "छोटू जा फलनवा के बोलवले आव कइह कि ट्यूबबेल पर भैया बोलवलं हं", मैं चला गया ।

मैं उसे भेजकर घर चला गया और जब तक लौटता वो घूरहुआ जोर से चिल्लाता हुआ भयभीत होकर भागता हुआ आ रहा था। बाद में गांव में हल्ला मचा के अमवा पर क भूत पकड़ले बा। लगी सोखइती होने,दूर-दूर से भूत भगाने वाले भी आए पर वो ठीक नहीं हो रहा था, बुखार हो गया था,रह-रह कर चिल्लाता । खैर भैया और हम भी गए देखने के लिए । भैया ने पूछा "का भईल रहल ह रे घुरहुआ ?" घुरहुआ ने बताया कि "जब तोहरे बोलवले पर हम ओ दिनवां गईलीं त जइसहीं आम की पेड़वा की लगे पहुंचलीं भईया..." उसकी बात काटकर तुरंत बोले कि "पेड़वा हीले लगल आ तोरी उपरां ढेर क पतई गिर गईल इहे न" वो बोला, "हं हं इहे भईल तुं कहां रहला।"

भैया बोले "भक्क बकलोल हमहीं त रहलीं पेड़वा पर रे, हमहीं पेड़वा हिलवलीं, पतइआ फेंकलीं।"तीन दिन से भूखा, बीमार घुरहुआ बिजली की गति से उठ कर बैठ गया और बोला "सहिए में भक्क मरदवा तुनाहीं"और हंसने लगा, बिल्कुल ठीक हो गया ।

बस ऐसे ही थे हमारे भईया बहोत मस्त अपनी मौज में रहते और सबकी सहायता भी करते थे।

कृतिका के कार्टून

कृतिका सिंह जी उभरती हुई कार्टूनिस्ट हैं, जीवन के विविध पक्षों पर आपके सीधे हस्तक्षेप करते कार्टून बहुत लोकप्रिय हैं, आप कृतिका जी को उनके फेसबुक पेज KRITIKA CARTOONIST (HTTPS://WWW.FACEBOOK.COM/CARTOONISTKRITIKA?MIBEXTID=ZBWKWL) पर फॉलो भी कर सकते हैं

प्रस्तुत है कृतिका जी के जीवंत कार्टून :

पुस्तक समीक्षा : धर्मद्वंद (उपन्यास)

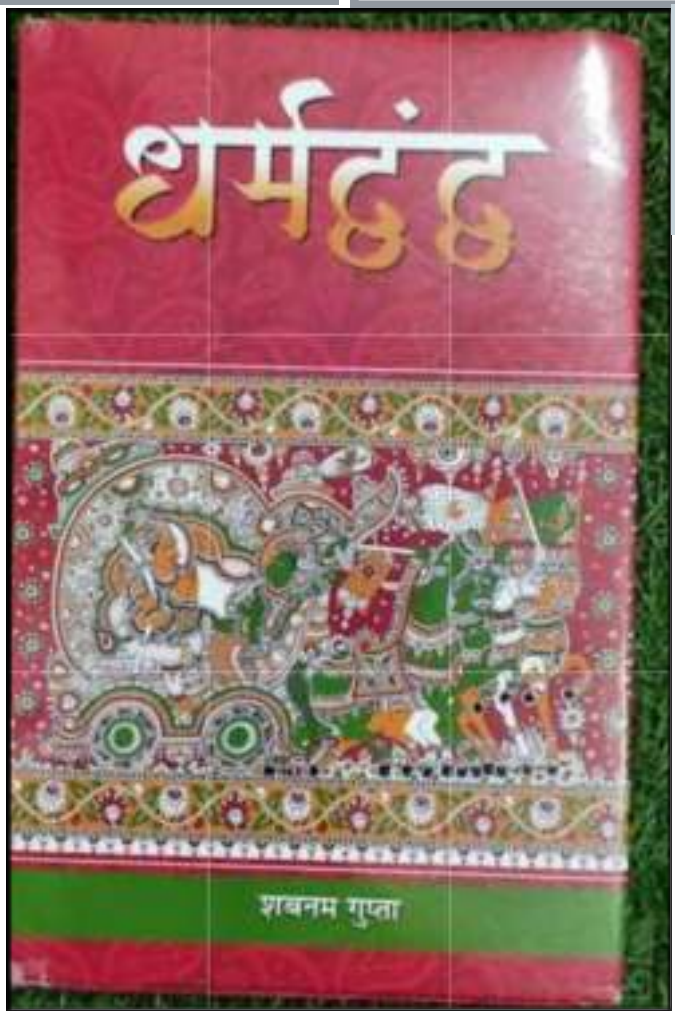

शुभम सरोज
सहायक आचार्य,
हिंदी जनता पी. जी. कॉलेज रानीपुर, मऊ

2022 में प्रकाशित 'धर्मद्वंद' उपन्यास समकालीन कथाकार शबनम गुप्ता का वर्तमान प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए लिखा जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिका ने पौराणिक कथा के सहारे वर्तमान में फैले सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक कुरुतियों पर करारा प्रहार किया है। इस उपन्यास में जाति-पाति, छुआछूत, स्त्री शिक्षा, सशक्तिकरण, गरीब अमीर के साथ साथ साम्यवाद का भी प्रभाव दिखा पड़ता है, और इस उपन्यास में नायक वासु के सहारे वर्तमान सत्ता से टकराने की जिंदादिली जो किसी भी प्रकार की सत्ता से नहीं घबराता है। पूरी कथा वासु से शुरू होती है और वासु के मृत्यु दंड तक चलती है यानी कि कथा की पूरी विषयवस्तु वासु के इर्दगिर्द तामाम प्रश्नों को लेकर घूमती है।

'धर्मद्वंद' उपन्यास एक बहुत ही रोचक काल्पनिक कथा पर आधारित है। यह कथा उस समय की जब हमारा भारतवर्ष दो भागो में कौरवों और पांडवों में विभक्त दिखाई पड़ रहा था! उस समय एक ऐसा आचार्य था, जिसका नाम वासु था, जो किसी राजवंश मात्र नहीं बल्कि पूरे भारत वर्ष को सबसे अच्छा बनाने की बात करता था, उसके उन्नति की बात करता था, उस समय जब धर्म किसी एक नियत के खूंटे में बंधा हुआ था तब वह उस सीमा रेखा से आगे बढ़कर धर्म की परिभाषा लिखता था, जिसमें धर्म, चिंतन और बुद्धि का मिश्रण होता है। जिस समय स्त्री को वस्तु समझकर पांच भाइयों में बांट दिया जाता है, ऐसे में उन्होंने स्त्री वर्चस्व, स्त्रीशिक्षा और सशक्तिकरण का पाठ पढ़ाया। जब जाति, वर्ण, समुदाय सब जन्म के आधार पर बंटा हुआ था, तब उन्होंने कर्म आधारित जाति का पाठ पढ़ाया ऐसे काल्पनिक आचार्य वासु पर आधारित यह कथा है।

इस कथा को संक्षेप अगर देखे तो कथा की शुरुआत राज़ दरबार से होती है जिसमें 30 साल का गुरुकुल आचार्य वासु जंजीर की बेड़ियों में जकड़कर राज्यसभा में प्रवेश होता है, क्योंकि आचार्य वासु पर सेनापति वीरभद्र की हत्या का आरोप होता है, उस समय राज़ दरबार का माहौल कहीं खुशी का था, तो कहीं गम का, कहीं उल्लास था तो कहीं विषाद क्योंकि उसके पूर्व की रात्रि में पांडवों ने जुएं में सबकुछ हारकर वन जानें की आज्ञा लेने आए हैं, युधिष्ठिर अपने भाइयों, द्रौपदी, कुंती के साथ खड़े हैं और गांधारी, कुंती वन जाने से पांच पांडवों को रोकती है। वासु युधिष्ठिर का बचपन का बहुत अच्छा ही मित्र रहता है, वासु एक पुजारी का पुत्र होता है और उसकी शिक्षा दीक्षा कौरवों और पांडवों के साथ हुई थी। बचपन से ही वासु हर मुददे को अपनी समझ और बुद्धि की कसौटी से देखता परखता था, सत्य बोलने से कभी नहीं घबराता था! वह बचपन में चोर सिपाही के खेल में भी वह दोषी चोर को नहीं बल्कि राजा को ठहराता था कि राज्य में चोर पैदा कैसे हुए राजा के राज्य काल में।

युधिष्ठिर और वासु अच्छे दोस्त हैं लेकिन दुर्योधन उससे नफरत करता है, जब यहाँ शिक्षण पूरी होती है तो भीष्म पितामह राजकुमारों को वापस हस्तिनापुर बुला लेते हैं। गुरु द्रोण को शिक्षा पूरी करने को बुला लेते हैं और उधर वासु आश्रम में ही रहकर शिक्षा पूरी करता है, उसी गांव के मुखिया की बेटी चारुलता जो सुंदर सुशील और गुणवान है उससे प्यार करने लगता है, उसी गांव का एक लड़का जो जोगी भोगी विलासी होता है, वह भी चारुलता से प्रेम करता है। बाद में वासु को गुरुकुल का आचार्य बना दिया जाता है। वीरभद्र शादी का प्रस्ताव चारुलता के सामने रखता है लेकिन यह प्रस्ताव चारुलता ठुकरा देती है अंततः वासु और चारुलता की शादी हो जाती है और वो गुरुकुल में आकर रहने लगते हैं।

जब पांडव वन से वापस लौट आते हैं तो वो आकर वासु से मिलते हैं और उसी समय द्रौपदी भी चारुलता से पहली बार मिलती है कुछ ईर्ष्या होती है। युधिष्ठिर वासू को अपने राज्यसभा का मंत्री बनाने हेतु प्रस्ताव देता है लेकिन वासु उसे अस्वीकार कर देता है समय साथ दिनप्रतिदिन वासु का खरापन, ईमानदारी, सत्यता, जिंदादिली को देखकर दुर्योधन और शकुनी कोवासु की बढ़ती हुई ताकत का अंदाजा हो रहा था वीरभद्र के साथ मिलकर उसको आश्रम छोड़ने के लिए वासु को परेशान करना शुरू करते हैं, इसके चलते कई बार वीरभद्र से झगड़ा भी होता है, दुर्योधन वासु को देशद्रोह करार कर देता है और छात्र गुरुकुल में आग लगवा देता है, जिससे वासु आश्रम छोड़ने के लिए मजबूर हो जाता है। एक दिन चारुलता आश्रम से बाहर जाती है तो वीरभद्र उसे उठाकर महल की तरफ ले जाता है वासु भी पीछे जाता है,वासु के माना करने पर भी नहीं मानता तो बासु और वीरभद्र के बीच झगड़ा होता है और वासु वीरभद्र का वध कर देता है। उसी समय महल मैं क्षत्रीयों की पत्नी अपनी लाज बचानेके लिए सहायता के लिए पुकार रही होती हैं और उनके पति धर्म के बंधन में बंधकर सिर झुकाए हुए बैठे तमाशा देख रहे थे, इन तमाम सवालों के साथ अंत में दुर्योधन ने वासु को मृत्युदंड देता है।

इस कथा को अगर हम मूल्यांकन और चिंतन करके देखते हैं तो पाते हैं कि इस काल्पनिक कथा में हमारा आज यानी वर्तमान परिस्थतियों को आइना दिखाया गया है। वासु जो इसका मुख्य नायक हैं उसके अंदर नायक होने के समस्त गुण दिखाई पड़ता है वह किसी भी प्रकार की बंधन से बनकर नहीं रहना चाहता है, वह समाज की सारी गतिविधियों को एक सत्य और यथार्थ की कसौटी पर रखकर दिखाने का प्रयास किया गया है और यह को समाज का आईना है उस राजनैतिक सत्ता की टकराहट से गुजरता है, उस समय राज्य में किसी को सत्य कहने में डर लगता है सब लोग सही- गलत आंख मूंदकर स्वीकार करने पर मजबूर रहते हैं। जैसे कि कथा में एक कथन है जो कृपाचार्य वासु के लिए कहता है कि- 'मै सत्य को तो जानता हूँ पर इसके खिलाफ़ मैं लड़ नहीं सकता हूँ, लेकिन वास्तव में यह वासु के अंदर है क्योंकि उसके लिए जो गलत है तो गलत है वह उसके खिलाफ़ लड़ भी सकता है और जान भी दे सकता है।' अर्थात् इस कथन को अगर हम वर्तमान के संदर्भ से जोड़ें तो जो लोग राजनीतिक सत्ता से जुड़े हुए हैं उनको उस सत्ता का विरोध कभी कर ही नहीं सकते क्योंकि वे उस सत्ता से अनुदान पाने के लालसा में रहते है वो असत्य को सत्य भी जानकर भी चाटुकारिता के चलते साबित करते है, वासु कभी भी चोर को भी चोर नहीं मानता नहीं उसे गुनहगार मानता है, बल्कि वह उस समय के राज्य तंत्र में बैठे राजा को दोषी ठहराता है क्योंकि वे सोचते है कि अगर तात्कालिक राजा ईमानदार, सत्य, बुद्धिमान और सबको समझने वाला है और सबका हित साधने वाला है तो उसके राज्य में चोर कैसे हो सकता है, इसका मतलब है कि हमारा राजा भी चोर है। वासु स्त्री शिक्षा, सशक्तिकरण की बात करते हैं और वो स्त्रियों को आत्मरक्षा का भी शिक्षा देते है। वो शिक्षा को समर्थक हैं क्योंकि वे जानते हैं कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे सामाजिक सारी कुरूतियों को दूर किया जा सकता है वे स्त्रियों को शिक्षा को साथ साथ आत्मरक्षा का भी ज्ञान देते हैं और अभ्यास कराते हैं और उस समय जाति- पाति व्यवस्था भी समाज में काफी था। एक बार कृपाचार्य के कहने पर भी उन्होंने द्रोणाचार्य से शिक्षा लेने से मना कर दिया क्योंकि उन्होंने कहा था कि तुम ब्राह्मण हो के शस्त्र चलाओगे यानी जन्म आधारित जाति व्यवस्था से टकराते हैं और इसे स्वयं खंडित करते हैं। उस समय युद्ध की इतनी भयावह स्थिति रहती है कि वासु यह सब देख कर बहुत दुखी होते हैं और कहते है कि देश का भविष्य युद्ध नहीं बल्कि शिक्षा तय करती हैं। उनका मानना है कि शिक्षक समाज का निर्माण होता है, उन्हें शिक्षण शिक्षा दोनों पर बल देते हैं जो आज के संदर्भ में भी बहुत ही सटीक नजर आती है इस कथा में मार्क्सवाद का प्रभाव दिखाई देता है, जिससे कि समाज के दो वर्ग है एक तो उच्च वर्ग है और दूसरा निम्न वर्ग है। वासु समाज को मूल्यांकित करके देखता है कि सारा का सारा धन उच्च वर्ग के ही पास है गरीब दिनों दिन गरीब होता जा रहा है उसका कोई ध्यान नहीं है। राज्य के राजा को या तत्कालीन सरकार को, सत्ता में बैठे अंधभक्तों को भी दिखाई नहीं देता क्योंकि वे सरकार की नीतियों को विरोध करने वालों में से नहीं है बल्कि सरकार से अनुदान लेने वाले में से है।

इस उपन्यास में धार्मिक कुरीतियों, वाह्य आडम्बर पर भी करारा चोट किया गया है क्योंकि हम देखते है की जिसपर परंपरा पर हम विचार नहीं करते चिंतन नहीं करते उसे उसी तरहस्वीकार कर लेते हैं तो हम अंधविश्वास को बढ़ावा देते है, इससे समाज एक अलग दिशा की तरह अग्रसर हो जाती है उसकी उन्नति नहीं बल्कि पतन होता चला जाता है दिन दिनों। उपन्यास आचार्य वासु जब धर्म की बात आती है तो कहते है की जब कोई बात आए धर्म के मामले में सुधार करने की बात आए तो उस पर सोचना चाहिये, उस पर विचार करना चाहिए, उनका निरीक्षण, मूल्यांकन करना चाहिये उस पर प्रश्नचिन्ह लगाना चाहिए अगर इसको हम वर्तमान संदर्भ में देखें तो आज हमारा समाज इन्हीं कुरीतियों और धार्मिक बह्याचर्य में कदम कदम में कसता जा रहा है और एक पतन की ओर बढ़ता जा रहा

है क्योंकि हमारे समाज में कोई उस पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगाता जिधर एक लोग चल दिए उसी तरफ सब भागे चले जाते है। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने ठीक ही कहा था 'हमारे हिन्दुस्तानी तो रेल के डिब्बे है' यह युक्ति बहुत ही सटीक बैठती है।. आगे एक कथन में वासु कहता है कि- 'सवाल उठाना आवश्यक है, अतीत को पीठ पर लादकर कर भविष्य की तरफ नहीं बढ़ा जा सकता है।'

इस उपन्यास में प्रेम प्रसंग और विवाह पर भी घात किया गया है इसमें कहा गया है कि प्रेम प्रसंग से होने वाली शादियों कही न कही हमारे समाज को प्रगति के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं। जो लोग प्यार में अंधे होकर शादी करते हैं और फिर आगे चल कर बहुत सारी सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है परिवार का टूटना सबसे बड़ी समस्या है। इसी कथा में वासु कहते हैं कि- 'प्रेम अंधा तो जरूर होता है पर विवाह तो आंखें खोलकर ही करनी चाहिए।' अर्थात् वो समाज के हर एक पहलू को एक चिंतन की दृष्टि से देखते हैं और दिखाना चाह रहे हैं ना की किसी भी पहलू को आंखमूंदकर स्वीकार करने की बात करते है। निष्कर्षतः देखें तो यह उपन्यास कला और शिल्प दोनों ही दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट कोटि का उपन्यास है। अपने समाज के जितनी भी समस्याएं हैं, समाज के जितनी भी विडंबनाएं है, चाहे हो किसी भी स्तर का हो लेखिका ने बखूबी उन समस्याओं का आईना दिखाने का प्रयास किया। वर्तमान संदर्भ में उपन्यास की सारी कसौटियों पर खरा उतरता है, यह एक सफल उपन्यास है, जिसमें हम कह सकते हैं कि यह उपन्यास जीवन की महागाथा है।

पुष्पराज यादव
भारतीय भाषा केंद्र
जेएनयू, दिल्ली

रिक्तियों के बाण मन के पर कतर कर ले गये हैं।

मंजिलों की ओर बढ़ते
कारवाँ में एक थे हम,
वक्त के हाथों रचित
स्वर्णिम सरस आलेख थे हम।
कामना का एक पंछी छटपटाये जा रहा है,
कुछ शिकारे पंख जिसके नोंचकर हर ले गये हैं।
रिक्तियों के बाण मन के.....

कोई तारा था गगन के
भाल पर यूँ जगमगाता,
कोई मोती था समंदर की
सतह में झिलमिलाता।
कोई आकर्षण उन्हें जब एक करने को बढ़ा तो,
बद-नियति के दंश दोनों की चमक हर ले गये हैं।
रिक्तियों के बाण मन के....

रह गये हैं मन के मरुथल
में तपनमय गर्म टीले,
गंध भरती घाटियों के
हो गये जब हाथ पीले।
रह गयी हैं नागफनियाँ आँचलों में बींधने को,
केसरों की क्यारियाँ, गुलशन सरोवर ले गये हैं।
रिक्तियों के बाण मन के.....

फ़खरे आलम
प्रसिद्ध गज़लकार
घोसी, मऊ

मैं अपनी यादों का
इक महल बनाना चाहता हूं,
जिसका दर हो तेरे तबस्सुम जैसा
औं' मेहराब हों कि जैसे रूखसार तेरा,
तेरे आँखों के झूमर
तेरे जुल्फों के चिलमन सजाना चाहता हूँ
मैं अपनी यादों का
एक महल बनाना चाहता हूँ
तेरे कदमों से पाये
तेरी बाहों से सुतूं हों जिसमें,
तेरी आगोश का
चमनज़ार बनाना चाहता हूँ
मैं अपनी यादों का..... एक महल बनाना चाहता हूँ।
इस तरह मेरी यादों का महल
उस ताज-ए-संग बेजाँ से भी खूबसूरत होगा
जिसमें मौत की खामोशी नहीं
तेरी अदाओं की शोखी का शोर होगा
तेरी अदाओं की शोखी का शोर होगा।

डॉ एस पी सती
पर्यावरणविद
उत्तराखंड

मैं
इंतज़ार करूँगा तुम्हारा
तुम मोनाल की तरह
छुपते कभी झलकभर दिखते आना
मैं बैठ कर चोटी में किसी
देखता रहूंगा ढाल पर बनी कैंचीदार पगडंडियां
तुम हौले-हौले सरकते आना
जैसे घाटियों से पसरता हुआ
चोटी की ओर सरकता जाता है साया

चातुर्मास में भागते दौड़ते कोहरे की तरह नहीं
तुम दबे पाँव बढ़ते बसन्त की तरह
सर्वत्र व्यापते हुए नापते हुए आना
ऊंघती फुनगियों पर शीतल छपाक मारते
फूलों की बगलों को गुदगुदाते
कफू की तान पर झूमते
झरने के संगीत पर थिरकते
तुम गद्दियों के मदमस्त मेढ़ों की
प्रेमातुर भिड़ंत का दर्शक मत बनना
नन्हें मेमनों की चपलता से पुलकित होना
म्योली के मधुर कण्ठ से प्रवाहित
गमन गीत से ऊर्जित होना
तुम शाम का इंतज़ार न करना
काफलपक्कू के शांत होने तक आ जाना
मैं इंतज़ार करूँगा तुम्हारा।

एहसासों की दीवारों पर
अब रंग प्रेम का चढ़ने दो,
यह प्रेम पंथ है बड़ा कठिन
इस कठिन राह पर बढ़ने दो ।
है अपना कौन, पराया कौन
इस राह पे चलकर पता चले ।
है नशा प्रेम का मतवाला,
अब नशा प्रेम का चढ़ने दो ।
इस राग द्वेष की दुनिया मे
धर्मालय नित तोड़े जाते
मैं प्रेम धर्म का सेवक हूँ
एक प्रेम का मंदिर गढ़ने दो ।

आलोक गिरि
युवाकवि
सिद्धार्थनगर

ऑफिस से आते जाते
गुलमोहर के फूल
पेड़ पर लदे मिलते हैं
पर इनको तोड़ने वाले कम मिलते हैं
कब तक किसका इंतज़ार करेंगे
कोई इन्हें संग ले ले
अंत में थक हार कर खुद ही टूट जाते हैं
कदमों के नीचे आकर अपने निशान छोड़ जाते हैं.....

अश्विनी तिवारी
युवाकवि
दिल्ली

वो नया मेहमान...

गोवर्धन दास बिन्नानी 'राजा बाबू '

जय नारायण व्यास कॉलोनी,

बीकानेर

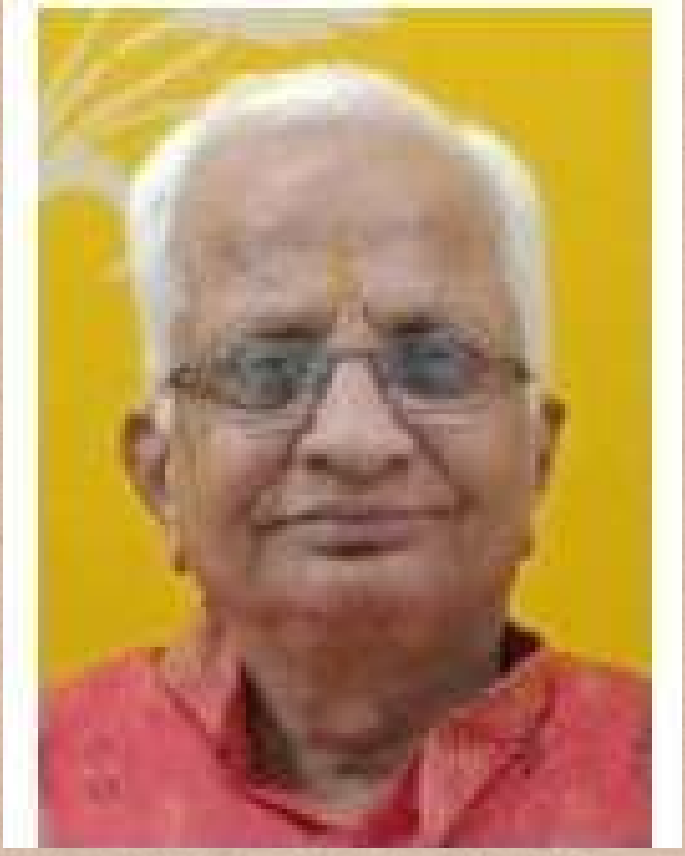

आज से पचास साल पहले मेरा दोस्त मेरा मुहँ मीठा कराते हुये बताया कि उसके घर में आज नया मेहमान आया है। जब मैंने पूछा लड़की हुयी है या लड़का तो उसने कहा कि, "मैंने खुशी के चलते भाई साहब से विस्तार में बात ही नहीं की।"

आगे चलकर मैंने अनुभव किया कि उस बच्चे को किसी दूसरे को देते नहीं थे और जैसा अमूमन होता है कि परिवार का सदस्य हो या कोई अन्य बच्चे को बाहर सुबह-शाम घूमा लाते हैं वैसा भी नहीं था।

और बच्चा बड़ा हुआ तो पाठशाला में दाखिला करवाया अवश्य लेकिन स्वयं ही लाते ले जाते रहे। उसे हमेशा बालक की पोशाक पहनाते रहे। इसी तरह किसी प्रकार वह विद्यालय स्तर पास कर गया। फिर जब कालेज दाखिला का समय आया तब पता चला कि वह 'इन्दिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी' से घर बैठे ही आगे की पढ़ाई करेगा।

इसी बीच एक दिन मुझे ऐसा आभास हुआ कि उसे भले ही अभी तक लड़कों वाला परिधान पहनाया जाता हो लेकिन वह तो लड़की है। तब निश्चय कर दोस्त से घूमा-फिरा कर इस पर जबाब मांगा तो उसने कह दिया कि आज-कल लड़के और लड़की का पहनावा तो एक समान ही है। इसलिये इसमें क्या खास बात है।

सी बीच उसे नौकरी भी मिल गयी तब वह निजी दुपहिया से नौकरी पर आने-जाने लगी। एक दिन उसके साथ काम करने वाला, जो मेरे एक परिचित का लड़का था ने अपने घर पर इस विषय पर चर्चा की। क्योंकि वह नौकरी स्थल के अलावा कहीं भी आती-जाती नहीं थी। वह आफिस में काम करने वालों के यहाँ भी आयोजित होने वाले किसी भी कार्यक्रम में जाती ही नहीं थी, बल्कि किसी न किसी बहाने टालती ही रहती। फलस्वरूप परिचित के लड़के का उस पर सन्देह गहराता चला गया।

एक दिन अचानक वह परिचित मेरे से मिलने आया और मुझसे उसके बारे में कुछ भी न बता कर, निवेदन किया कि मैं उस बच्ची के परिवार वालों से उसके लड़के से रिश्ते की बात करूँ।

मैंने मौका देख अपने दोस्त से उसके भाई-भाभी का हालचाल पूछ उसकी भतीजी के सम्बन्ध में बात करते हुये कहा, "अब सही समय है जब तुम लोग भतीजी की शादी कर दो।" दोस्त ने कहा कि अभी तक तो कभी भी इस विषय पर सोचा ही नहीं और भाई साहब के मामले में वह बीच में पड़ना ही नहीं चाहता है। मैंने आश्चर्य व्यक्त करते हुये कहा "क्या कह रहे हो ?" उसने कहा, "मैं बिल्कुल सोच-समझकर कहा है "

दो-तीन दिन बाद उस परिचित ने फोन पर ही पूछा कि क्या रिश्ते वाली बात उस बच्ची के परिवार वालों से की है ? तब मैंने हकीकत बयाँ कर दी। तब उसने कहा मैं समय निकाल एक-दो दिन में मिलने आऊँगा ।

जब वह मिलने आया तब उसने सारी बात स्पष्ट बता दी। मैं सोच में पड़ गया कि उस परिचित के लड़के का अनुमान कि वह किन्नर है, सही है। क्योंकि वह बच्ची बड़ी ही शान्त प्रकृति की थी, साथ ही बात-व्यवहार में बड़ी ही शालीन थी एवं पारिवारिक सदस्यों के साथ भी उसका व्यवहार बहुत ही आदर्शपूर्ण था। उसे उसके माता-पिता के साथ बाकी सभी सदस्यों का भी भरपूर प्यार मिलते हुये मैंने महसूस किया था। वह सारे त्यौहार सभी पारिवारिक सदस्यों के साथ-साथ बड़े ही धूमधाम से मनाती थी।कुल मिलाकर मुझे ही नहीं बल्कि मौहल्ले के किसी को भी उससे किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं थी।हां, हम सब मौहल्ले वाले यह तो अवश्य महसूस करते थे कि वह कभी भी हमारे यहां किसी भी कार्यक्रम में सहभागिता नहीं निभा रही है। इसके बाद मैंने मोहल्ले के अपने खास भरोसेमंद से इस किन्नर विषय पर संक्षेप में चर्चा की तब उसने कहा कि यह सही है। और यह तथ्य उसको उस बच्ची की बुआ ने बहुत पहले ही हिदायत देकर बता दिया था।

उस पूरे परिवार ने उसको पूरा संरक्षण देते हुए, सांस्कारिक भी बनाना है और उसको अपने पैरों पर खड़ा भी करना है ।

इसके बाद एक दिन मेरे दोस्त के बड़े भाई को हृदयाघात हो गया और उस समय वह परिवार एक बड़े शहर में रह रहा था। उस बच्ची ने बिना घबड़ाये अपनी माताजी को एकदम आश्वस्त कर घर पर ही रह भगवान नाम जप करते रहने का समझा, अपने पिताजी का उपचार एक अच्छे अस्पताल में करवाना शुरू कर दिया। इसी बीच उसने अपने परिवार वालों को सूचना भेज दी। खून की आवश्यकता हुयी तो उसने अपना खून भी दिया। धीरे-धीरे एक-एक कर परिवार वाले जब अस्पताल पहुँचे तो संयमितता से हाल बता सभी से आग्रह किया कि आप आये हैं, पापा से मिल लें, लेकिन कृपया कर न तो ज्यादा बात करें और न ही उनको बीमारी के बारे में बतायें। वो अवश्य ही जानने की कोशिश करेंगे तब यही कह दें कि सारी जाँच हो जाने पर ही सही बीमारी का पता चलेगा।

वह रात-दिन अस्पताल में ही रहती। रात को भी किसी को रहने नहीं दे रही थी। बीच-बीच में माताजी को बुला स्वयं भी मिल लेती और अपने पापा से भी आराम से मिलवा देती। कुल मिलाकर उसने पूरे सुझबुझ व संयम से वह कठिन समय निकाला। जब उनको छूट्टी मिल गयी तब भी वह उनका डॉक्टर के हिसाब से पूरा देखभाल भी करती और आफिस भी सम्भाल रही थी।

इसके पश्चात उनका देहान्त हो गया तो उसने अपने चाचाजी को तुरन्त बुलाकर पूरा सहयोग दिया क्योंकि छोटा भाई होने के नाते उसे ही पन्द्रह दिन वाला कार्यक्रम सम्पन्न करने का उसकी भाभी ने आग्रह किया था। इन पन्द्रह दिनों में किसी का भी एक ढेला न लगे इसका पूरा-पूरा ध्यान रखा।

इसके बाद अपनी माताजी को लेकर हरिद्वार वगैरह जा कर आयी। और आगे चलकर जब माताजी बीमार पड़ी तो जैसे पिताजी की सेवा की उसी तरह माताजी की भी की। एक बार उस शहर मुझे किसी कार्यवश जाना पड़ा तब अपने सम्बन्धों को ध्यान में रख मैं उनके घर भाभीजी से मिलने गया।उस समय वह बच्ची घर पर नहीं थी लेकिन भाभीजी मिलीं और

उनसे ही इतना सब कुछ बातचीत के दौरान पता चला क्योंकि उनको मालूम हो गया था कि अब मोहल्ले वालों को सारी वस्तुस्थिति पता चल गयीहै। उन्होंने आगे बताया कि वैसे तो वह निडर की तरह रहती है लेकिन मेरे सामने अपने पिताजी को याद कर अकेले में खूब रोई और उसे शान्त कराना मेरे लिए बहुत भारी हुआ।

उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि यहसब प्रारब्ध का फल है। यही हम दोनों जीवों का मानना था। और हमने इसके जन्म पश्चात ही निर्णय कर लिया था कि इसे कभी भी एहसास नहीं होने देंगे और बढ़िया ढ़ंग से पढ़ा-लिखा सांस्कारिक भी बनायेंगे और उसको अपने पैरों पर खड़ा भी कर देंगे ताकि उसे किसी अन्य पर आश्रित न होना पड़े। इसी बीच वह आफिस से लौट आयी और आते ही मुझे पहचाना ही नहीं वल्कि मेरे नाम के आगे चाचाजी लगा झुक कर प्रणाम किया और बरबस मेरे मुहँ से आशीष वचन 'खूब नाम कमाओ' निकल गया।

इसके पश्चात भाभीजी का भी देहान्त हुआ और मेरे दोस्त का भी। उसने बाखूबी सब नियम पालना करते हुवे अपना दायित्व समयानुसार बहुत ही बढ़िया ढ़ंग से निभाया। आज भी वह समय-समय पर अपनी चाची से बतिया लेती है। लेकिन उसकी चाची ने ही एक बार मुझे बताया कि वह इन तीनों को बहुत ही याद करती है।और अब एकाकीपन महसूस कर रही है क्योंकि वह मुझसे वहाँ शहर मेंआकर साथ रहने को कहती है।

उपरोक्त से यह तो सिद्ध हो गया कि किन्नरों की भी हमारी तरह सब तरह की भावना होती है। यदि उचित संरक्षण मिले तो वे न तो लड़के से कम दायित्व वाली होंगी और न ही लड़की से।